कौन सा पंचांग खरीदें ?

ले०- प्रेमशंकर उदयशंकर दवे,

अमरावती (बरार).

CHECKED 1973

Initial

५१
४२ प्र।

१८५२०
१८. २. ५८

फा. शु. ६ बुधे सं० १९९५

शके १८६०

पंचांग

ऐसा नहीं है कि सभी मनुष्य विना जाने कोई भी पंचांग खरीद लेते हैं, परंतु अधिकतर लोग पंचांग को खल्प मूल्य और सुन्दर छपाई देख करही खरीदते हैं। बहुत से लोग ऐसे हैं जो संप्रदाय के ही अनुकूल पंचांग लेते हैं। परंतु पचांग की प्रधानता न तो संप्रदाय पर, न उसके मूल्य और न छपाई पर निर्भर है। पंचांग की श्रेष्ठता उसके गणित के आधार पर है। चाहे जैसा शुद्ध और सूक्ष्म गणित क्यों न किया हो परंतु यदि जिस ग्रंथ के आधार पर गणित किया गया है, वह ग्रंथही अब लागू नहीं होता है, तो इसपर से किये गये शुद्ध और सूक्ष्म गणित का भी कुछ उपयोग नहीं है। ज्योतिष के ग्रंथ सर्व कालीन नहीं हो सकते हैं। ग्रहों की स्थिति और गति का अवलोकन करके आचार्य ग्रंथ की रचना करते है। फिर जब बहुत काल व्यतीत होजाने पर ग्रहों की गति में अन्तर पड़ जाता है तब उस ग्रंथ से किया हुआ गणित आकाश में ग्रहों की प्रत्यक्ष स्थिति इत्यादि से मेल नहीं खाता, और तत्कालीन आचार्यों को पुनः दूसरा ग्रंथ निर्माण करना पड़ता है। उस ग्रंथ की भी वही दशा होती है यह कुछ आज ही किसी ने नई बात ढूंढ निकाली है, ऐसा नहीं है। परंपरा से ऐसा ही होता चला आया है। सूर्य सिद्धांत सरीखे प्राचीन ग्रंथों तक में यही लिखा मिलता है। तद्पश्चात् एक के बाद एक बहुत से सिद्धांत-ग्रंथ भारतवर्ष में बनते चले आये है, और निरुपयोगी होते गये हैं।

२. यंत्रों से वेध लेकर आकाश में प्रत्यक्ष ग्रहों की गति, स्थिति इत्यादि देखते हैं और ग्रंथ से किये हुए गणित को उससे मिलाते हैं। यदि दोनों ठीक मिलते हैं तो ग्रंथ शुध्द समझा जाता है और यदि अंतर पड़ा तो जितना अंतर पड़ा उसको जोड़ देते हैं; उसे बीज संस्कार कहते हैं। आज कल के प्रचलित कुछ ग्रंथों मे ऐसा ही बीज-संस्कार दिया हुआ है-परंतु वह कई वर्ष पीछे का है और आज कल बीजसंस्कृत ग्रंथ भी लागू नहीं होते। ऐसी स्थिति में कोई आश्चर्य नहीं कि जो पंचांग उन ग्रंथों के आधार पर बनाये गये हों, अधिकतर अशुद्ध हों,। विद्वानों को यह बात अच्छी तरह से ज्ञात है, चाहे सर्व साधारण को न हो। इस त्रुटि को दूर करने के लिये पंचांग शोधन की खट पट भी बहुत वर्षों से चली आती है, विशेष करके महाराष्ट्र देश में और उज्जैन आदि स्थानों में। आधुनिक पंचांगों में क्यों और कितना २ अंतर पड़ता है, इस शास्त्रीय विषय को, सूक्ष्म विचार को अभी अलग २ रख कर, केवल इतना कहना बस होगा कि बहुत से पंचांग न तो आकाश के चमत्कार देखने अथवा ग्रहों, नक्षत्रों के अवलोकनार्थ सूक्ष्म गणित के उपयोग के हैं; न वे एकादशी आदि व्रत उपवासादि धर्म विषयों के निर्णय में प्रमाण भूत हैं, न उनसे विवाह, व्रतबंध यात्रा आदि के मुहूर्त सूक्ष्मता से निकाले जासकते हैं। जन्मपत्री, वर्षफल आदि के कहने के काम में भी वे विश्वसनीय नहीं है। पुराने पंचांगों में कितना अंतर पड़ता है उसका दिग्दर्शन मात्र नीचे कराया जाता है:—

१—ग्रहण कभी २ मिल जाते हैं, कभी २ दो घंटे तक का अंतर पड़ जाता है।

२—गुरु और शुक्र के उदय, अस्त में १ माह तक का अंतर पड़ता है।

३—चंद्र अमुकतारा से जुड़ा हुआ आकाश में कब दिखाई देगा, ऐसे गणित में ७ दिन तक का अंतर पड़ता है।

४—पंचांग की तिथि, नक्षत्र, योग,-आदि में १८ घड़ी अर्थात् ७॥ घंटे तक का अंतर पड़ जाता है। यह अंतर ज्यों २ अष्टमी के तरफ जाओ, त्यों २ अधिक होता है। पूर्णिमा और आमावास्या का अंतर बहुत कम होता है।

५—सूर्य के गणित में १५ कला-अर्थात् ६ घंटों का-अंतर पड़ता है, बुध के गणित में ९ अशों का अर्थात् एक तृतीयांश राशि का अंतर पड़ता है। दूसरे ग्रहों में भी १ अंश से ३½ अंशों तक का अंतर पड़ता है।

३. इतने अंतर पड़ जाने से क्या परिणाम होता है इससे अनुमान हो सकेगा कि यह बात सामान्य नहीं है। ग्रहण का ठीक समय न मालूम होने से ग्रहण का वेध कब लगा, यह और उसका मोक्षही कब हुआ यह नहीं जाना जा सकता, फिर वेध में क्या ठीक ग्रहण लगने पर भोजन करने की पारी आती है, जैसा कि सं० १६७० के भाद्रपद शु १५ के सायंकाल के चन्द्र ग्रहण के समय हुआ था। फिर ग्रहण के समय में, जपदान, पुण्य के अवसर के भी चूकने की संभावना है जब तक कि अपने पंचांग को तिलांजलि देकर आकाश में ग्रहण प्रत्यक्ष देख २ कर कर्म न किया जावे और यदि ऐसे देख कर काम चलाया

तो पंचांग का उपयोगही क्या ! वह तो मुसलमानों के समान चांद देख कर तिथि का ज्ञान करने के समान ही हुआ.

४. गुरु शुक्र के उदय-अस्त में इतना अन्तर पड़ने से-अस्त में ही, जब शुभ कार्य वर्जित है, बहुत से कर्म्म होंगे-और उदय होने पर भी विवाह आदि शुभ कार्य होने से वंचित रहेंगे।

५. चन्द्र और नक्षत्रों के योग-तारा के गणित चूकने से देश प्रजा आदि का फल सर्वथा नहीं मिलेगा।

६. एकादशी आदि के निर्णय में एक २ घटी का विचार धर्म शास्त्र में किया जाता है। यहां १८ घड़ी की पोल है। जिस रोज एकादशी बिलकुल नहीं है, उस दिन एकादशी मानी जाती है एक है तो मानी जाती है दो, ऐसाही और सर्व व्रतों (रामनवमी, जन्माष्टमी, चतुर्थी) का हाल होता है। विवाह में भद्रा बचाते हैं परन्तु जब पंचांगों में भद्रा नहीं है, तब ऐन विवाह के लग्न में भद्रा रहती है और मूहूर्त के दिन के दिन बदल जाते हैं। नक्षत्रों की घटी में अंतर हुआ है तो जन्म नक्षत्र ठीक नहीं जाना जाता है। जन्म का नाम कुछ का कुछ हो जाता है और राशि भी नहीं ज्ञात हो सकती है। फिर वधू बर का अष्ट मैत्री अर्थात् जन्म पत्री मिलाने पर भी जन्म भर खड़ जंग मचा रहता है। दशा निकालने में आठ वर्ष का अंतर पड़ जाता है, अर्थात् पलंग पर रोगग्रस्त मनुष्य को जब ज्योतिषी यह कहता है कि कष्ट की दशा केवल ८ दिन और है, तब संभव है कि आठवर्ष और भोगने पड़ें-या जिस भविष्य-दशा के भय से आप कांपते हैं, वह पहिले ही निकल गई है।

।तिथि, नक्षत्रयोग, करण जब सब ही चूक गये तो बिचारे यात्रा मुहूर्त, अमृत-सिद्धि आदि कहां रहे। " अठारह घड़ियां " अंतर के कारण केवल " दुघड़ियां " " चौघड़ियां " मुहूर्त पर भरोसा रखना पड़ता है, वचनामृत के मुहूर्त विषमय हो जाते है। गोरखनाथजी के भी मुहूर्त क्या हाथ दे सकेंगे ? यहां तो सबकी नींव ही गई, फिर ऊपर के घर का क्या हाल होगा।

७. मकर संक्रांति इत्यादि का पुण्यकाल सूर्य की गति पर है, जब उसमें १५ घड़ी का अंतर पड़ा तो सबेरे की संक्रांति मध्याह्न को और मध्याह्न की संक्रांति सायंकाल को। वर्ष के फलादेश में कुछ का कुछ होजाता है क्योंकि बहुत से वर्षों का गणित अशुद्ध होजाता है। चंद्र के गणित चूकने से यदि किसी का मुखवर्ण साहब के गौर वर्ण को मात करता है तो फलित ज्योतिषी अफ्रीकन नीग्रों के समान कृष्ण वर्ण बतलावेंगे, और बुध का गणित चूका कि अलसी के व्यापार में लाखों के न्यारे व्यारे हो गये। जब आप को कन्या का विवाह करना परमाव-श्यक है तब ज्योतिषी अष्टम बृहस्पति बतलावेंगे। वह पहिले ही होजावेगा और जब करने बैठेंगे तो ठीक अष्टम बृहस्पति में।

८. शनिने किस दिन राशि बदली उस दिन के ऊपर से निकाला जाता है कि वह चाँदी, सोने या लोहे के पाद से आया। जब यहां उसके गणित में २॥ मास का अंतर है तो सप्त धातु में ज्योतिषी कौनसा पाद कहेगा। साढ़ेसाती इत्यादि में यही २॥ मास का अंतर पड़ेगा। जब यह अंतर पड़ता है तो जन्मकुंडली और उसके फल का क्या हाल होता होगा। केवल पूर्व जन्म का पुण्य आड़े आजावे और शुद्ध कुंडली अनायास से बन जावे तो

नहीं कह सकता, नहीं तो कुंडली का बहुत कुछ फल निष्फल ही है। यह तो केवल दिग्दर्शन मात्र कराया गया है असली हाल वेही जानते हैं, जो जानते हैं।

९. यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि यदि ऐसा है तो धर्म शास्त्र, गणित और फलित ज्योतिष आदि सब गया! परंतु ऐसा नहीं है। देशकालानुसार विद्वान भी उत्पन्न होते हैं और समय समय पर चालन देकर नये २ ग्रंथ और पंचाग बनाकर लोकोपकार करते हैं। हिन्दुस्थान में अब कई शुद्ध पंचाग छपने लगे हैं परंतु पहिले तो सर्व साधारण को पंचांग के विषयों का पूरा २ ज्ञान न होने से लोगों का उस तरफ ध्यान ही नहीं जाता। फिर किस पंचांग में कितना अंतर क्यों और कब पड़ा, यह परीक्षा करने कौन बैठता है "बाबा वाक्यं प्रमाणं" चलता है। यदि दैवयोग से किसी ने बतला दिया तो "आग्रह" नहीं पीछा छोड़ता। फल यह हुआ है कि मनुष्यों के अनुसार पंचांगों की भी जाति पांति तथा सम्प्रदाय होगये हैं। जैसेः—

१—चंडू पंचांग, वैश्य जाति

२—बम्बई, पूना, लश्कर का पंचांग, ब्राह्मण जाति

३—जियालाल का पंचांग, जैन संप्रदायी इत्यादि

यह पंचांगों की वर्ण-व्यवस्था सर्वथा गर्हणीय है। ज्योतिषकी कसौटी पंचांग है और पंचांग की कसौटी आकाश में है। चाहे जैसे धनी ने सहायता दी हो, चाहे जैसा सुंदर छपा हो, चाहे जो कीमत हो, चाहे किसी भी आचार्य के गणित के आधार पर चाहे जैसे परिश्रम से चाहे जिस ज्योतिषों ने गणित किया

हो, यदि उस पंचांग के गणित को आकाश से ताड़ने बैठे और वह न मिला अर्थात् पंचांग में ग्रह अमुक स्थान में है, ऐसा लिखा हो और आकाश में और कहीं मिला या यंत्रों से तिथि आदि न मिली, या ग्रहण न मिला, अर्थात् पंचांग यदि वेध सिद्ध नहीं है तो बस "अजागल स्तनस्येव तस्य जन्म निरर्थकम्"। उसको कदापि काम में न लाना चाहिये। यह प्रत्यक्ष आकाश में स्थित सूर्य चंद्र इत्यादि देखकर उनके गणित का विषय है। इसमें श्रद्धा और आग्रह के लिये स्थान ही नहीं है। चाहे जैसा श्रद्धालु और हठी हो, परंतु उसके कहने से "दो दूनी पौने चार" कैसे हो सकते है पुराने पंचांगों के माननेवाले पुरानी रेलवे गाइड हाथ में लेकर डाकगाडी के लिये स्टेशन भलेही दौड़े जावें, परंतु यदि डाकगाडी का टाइम बदल कर वह पहिले ही छूट गई है तो रेलवे गाइड क्या सहायता देगी! वैसेही जब ग्रहों ने अपनी गति ही आज सैकड़ों वर्ष से बदल दी है तो पुरानी गति का ब्यौरा बतानेवाला पंचांग सूर्य, चंद्र को थोड़ेही ब्रेक कस दे सकता है यह सब लिखने की आवश्यकता न थी। परंतु जब देखते हैं कि आज ४० वर्ष से शुद्ध पंचांग छपता है और सर्व साधारण के उपयोग में नहीं आता, तब यह सब लिखना परमावश्यक है नहीं तो नित्य नैमित्तिक धर्म, कर्म, ज्योतिष शास्त्र इत्यादि सब का ह्रास होता ही जावेगा।

१०. भारत वर्ष में पुराने पंचांगों के तीन मुख्य प्रकार हैं, सूर्यसिद्धांत, ब्रह्मसिद्धांत, और आर्यसिध्दांत। इन सिध्दांत-ग्रंथों और तंत्रों पर से गणित करने में बहुत ही अधिक परिश्रम

पड़ता है। कलियुग के प्रारंभ से आज तक का गणित करना पड़ता है। सुगमता के हेतु भास्कराचार्य इत्यादि ने करण ग्रंथ बनाये। इन से गणित शीघ्रता से और, थोडे प्रयास से होता है। तद्पश्चात आचार्यों ने और भी उन्नति करके सारिणी (कोष्टक) बना दीं, जिससे और भी सुभीते से पंचांग बनते हैं। परंतु वे ग्रंथ इन्हीं तीन सिद्धांन्तों के आधार पर हैं। आज कल के अधिक प्रचलित पंचांगों में बंबई, पुना, लश्कर वा काशी के भी बहुत से पंचांग, गणेश दैवज्ञकृत ग्रह-लाघव ग्रंथ के आधार पर बनतें है, अर्थात् सूर्य सिद्धांत मतानुलंबी है। चंडू पंचांग ब्रह्म सिद्धांत के अनुसार बनता है। आर्य पक्ष का प्राबल्य मलेवार, द्राविड़ इ० प्रांतों में है, हिंदुस्थान में सब से अधिक प्रचार ग्रहलाघवाय पंचांगों का है। यह ग्रंथ १४४४ शकाब्द में बना था और सब से आधुनिक होने के कारण इस का गणित उतना नहीं चूकता जितना और पुराने ग्रंथों का। तात्पर्य यह है कि चंडू पंचांग से बंबई, पूना, लश्कर इत्यादि के पंचांग अधिक शुद्ध है। परंतु जैसा ऊपर लिख आये हैं, सर्व साधारण को जितने पंचांग मिलते हैं, वे सभी अशुद्ध हैं। यही कारण है कि आज ४० वर्ष हुए काशी में बापू देव शास्त्री (सी. आइ. ई.) के समय में आंदोलन हुआ और उन्होंने लोक हितार्थ शुद्ध पंचांग सं० १९३३ से छपवाना प्रारंभ किया। अब उनके पुत्र गणपति देव शास्त्री (रतन फाटक-काशी) और शिष्य वर्ग अभी भी बापू देवीय पंचांग प्रति वर्ष छपाते जाते हैं। फिर बम्बई मे सं० १९६१ में पंचांग-शोधन सभा हुई—इसमें अखिल भारत वर्ष के ज्योतिषी एकत्र थे उन्हों ने एक स्वर से यह कहा कि सब प्रचलित पंचांग अशुद्ध हैं और नया बेधासिद्ध शुद्ध

ग्रन्थ बना कर उसके आधार पर नया पंचांग बनाना चाहिये । फिर सं० १९७४ में पूना में सभा हुई । उसके नियम के अनुसार पूना से पंचांग निकलता है । वह महाराष्ट्र देश मे तिलक पंचांग के नाम से प्रसिद्ध है परंतु उसका वहां प्रचार अल्प है। तीसरा शुद्ध पंचांग केतकर का है जो कि केतकी पंचांग के नाम से प्रचलित है और व्यंकटेश्वर छापखाना बंबई में छपता है। चौथा चित्रशाळा प्रेस पूना का पंचांग इस में केतकर के ग्रंथों पर से गणित किया है इन चारों पंचांगों में परस्पर कुछ भेद हैं परंतु स्वल्प है । सब में श्रेष्ठ पंचांग केतकी या चित्रशाळा पंचांग है और यदि वह लभ्य नहो, तो बापूदेवीय। बंगाल और दक्षिण मे भी शुध्द वेधसिध्द पंचांग छपते है।

११. पंचांगो के विषय में एक बात ध्यान रखने योग्य यह है कि पंचांग एक देशीय होते हैं। जो पंचांग जिस रेखा के गणित का है वह उसी देश में लागू होता है कोई सा भी पंचांग सार्वदेशीय नहीं हो सकता। अपने २ नगर के उपयोग में लाने के लिये इन चारों में से किसी भी पंचांगों को रेखांतर संस्कार चर संस्कार इत्यादि देना चाहिये, नहीं तो एक दो घड़ी का अन्तर सहजही पड़ जाता है। जिनको आकाश के चमत्कार, नित्य नैमित्तिक कर्म, व्रत, उपवासादि धर्म-कार्य और ज्योतिष के ठीक फल जानने की इच्छा हो उनको चाहिये कि वे उपर्युक्त ४ पंचांगों में से किसी एक को और विशेष करके केतकी पंचांग को मान्य समझें ।

(कान्य कुब्ज नायक से उध्दृत)

पंचांग सर्व देशीय नहीं हैं।

सैकड़ो वर्षोंसे अपने हाथमें अपने प्रांत का जो पंचांग है वह अपने निवासस्थान के लिये कहांतक लागू है यह जानना अवश्य है. योग्य कालपर व्रतोपवासादि धर्म कार्य तथा सामाजिक त्योहार के लिये एक प्रांत का पंचांग दुसरे प्रांत में विशेष उपयोगी नहीं होता. इस के लिये उसी प्रांत का निवासस्थान के समीपीय रेखासे गणित किया हुआ पंचांग पास रखना परम आवश्यक है। अपने प्रांत का दृक् प्रत्यय और वेधसिद्ध पंचांग भी क्यों न हो वह सैकडों मील की दूरीपर काम नहीं आसक्ता. जिस रेखा का पंचांग बना है उससे अगर आप ६७ मील पूर्व किंवा पश्चिम दूरीपर हो तो ४ मिनिट का अंतर उस पंचांग में पड़ जावेगा. और उसी प्रकार प्रति ६७ मील अर्थात एक अंश में ४ मिनिट का अंतर पड़ता जावेगा. यह तो रेखांतर संस्कार हुआ. लंका से ज्यों ज्यों उत्तरोत्तर प्रांत में जांवेगे, त्यों त्यों भी पंचांगो मे अंतर पड़ता जावेगा. यह अंतर रेखांतर के समान नियम बद्ध नहीं है. पहिले अक्षांशमें कुछ तो दुसरे अक्षांशमें और न्यनाधिक अंतर पड़ता जाता है. इससे सूर्योदय और सूर्यास्त में फरक पड़ता जाता है. अपने जेब की घड़ी में जो समय है वह "Standard" स्टँडर्ड टाईम है. अर्थात् काशी के रेखा का समय है. इसी को रेलवे टाईम भी कहते हैं. क्यों कि पंचांग बम्बई कलकत्ता अथवा काशी मे छपा है इस कारण यह नहीं समझना चाहिये कि उन्हीं उन्हीं नगर की रेखा का वह पंचांग है. बहुत से पंचांग कर्ता उज्जैन का गणित करते है और कुछ अपने नगर का करते है. यह बात का निश्चय पंचांग के कुछ पहिलों पृष्ठों को देखकर कर लेना चाहिये और साथ में यह भी देख लिया जावे कि किस ग्रंथ के आधार पर गणित किया है.

पंचांग शोधनका वृत्तान्त

आज भारत वर्ष मे पंचाग संशोधन के बहुत प्रयत्न हुये हैं। कारण कि "संस्कृति ये धर्म का आत्मा है"। यदि संस्कार योग्य काल मे हों तो हि संस्कृति टिक सकती है. ये बात सर्वमान्य थी और अभी भी है.

२ शकें १७९६, संवत् १९३१ के लगभग या उसके पूर्व ये बात सब लोगोंके दृष्टि गोचर हो गई कि प्रचलित पंचाग दृक्तुल्य नहीं हैं. श्री क्षेत्र काशी के विद्वान् बापुदेव शास्त्री सी. आय्. ई ने तत्कालीन ज्योतिषियों से विचार विनिमय करके एक वेध-सिद्ध, दृक्तुल्य और धर्म शास्त्रोपयोगी ऐसा पंचाग बनाना प्रारंभ किया वह आज तक चालू है.

३ महाराष्ट्र मे इसके अनंतर सुप्रसिद्ध गणक कै० केरु नाना छत्रे ने दृक्तुल्य १८ अयनांश का पंचाग प्रारंभ किया. यही पटवर्धनी पंचाग है. तत्कालीन ज्योतिषियों ने इसका विरोधी किया. कै० लेले, चिटणीस, पेंडसे, मोडक, प्रभृति विद्वान इसके विरोधी थे. शके १८१४ संवत् १९४९ मे श्री मज्जगद्गुरु शंकराचार्य, द्वारका मठ ने सायन पंचाग मानने का आज्ञापत्र ग्वालियर मुकाम मे (वार अंक २२९ फाल्गुन कृष्ण ८) श्री विसाजी रघुनाथ लेले को दिया. ऐसा भारतीय ज्योतिःशास्त्र के इतिहास (पृष्ठ ४०८) से स्पष्ट है. ये सायन पंचाग निर्णय उस समय के जनता ने माना नही ऐसा दिखता है. तद्पश्चात पंचाग शोधनका कार्य सर्वत्र चालू रहा.

४ शके १८२६ संवत् १९६१ मे श्रीमत् शंकराचार्य जगद्-गुरु, द्वारका मठ के आधिपत्य मे अखिल भारतीय ज्योतिषियों का संमेलन मुंबई मे हुआ. इस समय सब प्रांतोसे लगभग ५०० ज्योतिषि उपस्थित थे. कै. लोकमान्य टिळक, रावसाहेब कटक-कर, ज्योतिषाचार्य केतकर, काशीके महादेव शास्त्री घाटे, पं० चंद्रदेव, वेताळ शास्त्री, मुंबईके पं. कार्तांतीक महादेव राजाराम बोडस इत्यादि विद्वान, जामनगरके महामहोपाध्याय हाथीभाई शास्त्री, श्रीमंत बडोदा नरेश महाराजा गायकवाड अमरावतीके श्रीमंत बाळासाहेब बापट वकील और ज्योतिर्विद् मण्डल के अध्यक्ष पं. प्रेमशंकरजी दवे इत्यादि लोग वहां उपस्थित थे. संमे-लन मे सूर्य सिद्धांतोक्त वर्षमान् (प्रत्यक्ष वर्षमान से ८ पलअधिक) और वेधसिद्ध और दृकतुल्य गणित के ऊपर से पंचाग बनाना निश्चित हुआ. संमेलन के ठरावानुसार नया करण ग्रंथ बनाने-वाले को २५०० रु. की इनाम देनेका अखबारों मे जाहिर किया गया. परंतु संपूर्ण भारतवर्ष में कै ज्योतिषाचार्य व्यंकटेश बापुजी केतकर के सिवाय और कोई दूसरा ज्योतिषी आगे नहीं आया. वर्षमान को छोड़कर बाकीका सब गणित वेधसिद्ध था. अर्थात् केतकी गणित के अनुसार ही था. सूर्य सिद्धांतोक्त वर्ष-मान ज्यो. केतकर को मान्य नही था.

५ पहिले अखिल भारतवर्षीय ज्योतिष संमेलन के ठराव की ये स्थिति देखकर महाराष्ट्रीय विद्वानोंने पूना मे शके १८३९, संवत् १९७४ के लगभग कै. लोकमान्य टिळक इनके प्रधानत्व मे केवल महाराष्ट्रीय ज्योतिषियों का संमेलन हुआ. इस संमेलन मे २३ अयनांश का शुद्ध वर्तमान लिया गया. दृक्तुल्य गणित के अनुसार पंचाग बनाने का निश्चित हुआ. और तदनुसार

शके १८४३ पर्यंत पंचाग छपे. इस पंचाग मे फक्त अयनांश २३ और बाकीका सब गणित केतकी का था. इस निर्णय के विरुद्ध सांगली मे कै. साहित्याचार्य श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर वकील खामगाव (वऱ्हाड) अध्यक्षतामे विशेष विशेष महाराष्ट्रीय ज्योतिषियों का संमेलन हुआ. इसमें कै. केरुनाना छत्रे के पटवर्धनी पंचाग का पुनर्जीवन हुआ. शके १८४४-४५ से १८॥ अयनांश का पंचाग पूना से छपने लगा. इस पंचाग को जगन्नाथपुरीके वैष्णव पीठ के मठाधिकारी अनंताचार्य ने दृक्तुल्य होने का प्रशस्ति पत्र दिया. व कै० लोकमान्य टिळक व डॉ० भाटवडेकर इनकी शिफारस भी इस पंचाग मे छपी है. यह पंचाग टिळक पंचांग के नामसे प्रसिद्ध है. ये मुंबई व नागपूर शहर के अक्षांश रेखांशानुसार बनाया जाता है. अयनांश के शिवाय और तरह से यह पंचाग दृक्प्रत्यय है. अयनांश के कारण से सूर्य संक्रांति मे ४ दिन का अंतर ग्रहों के राश्यंतर मे फरक, भिन्न अधिक मास, चंद्रनक्षत्र और योगों की घटी मे विचार करने योग्य फरक होने के कारण महाराष्ट्र (दक्षिणेतह), खानदेश, वऱ्हाड, मराठी मध्यप्रांत, मुगलाई के मराठी भाग मे इस पंचाग के विरुद्ध ब्राह्मणों का अति विरोध है.

६ शके १८४६ मे ५० के भीतर महाराष्ट्र प्रांत के ज्योतिषियों के दो संमेलन हुये. पूना मे औंध के संस्थानाधीष श्रीमंत बाळासाहेब पंत प्रतिनिधी के नेतृत्व मे संमेलन होकर ऐक्य वर्धक पंचाग का जन्म हुआ. इस पंचाग का गणित बहुत् कुछ चित्रा पक्षीय है औंध संस्थान मे यही चित्रा पक्षीय पंचाग आरूढ है. वहां त्योहारों की छुट्टीयां इसी पंचागानुसार दी जाती है. ऐक्य-वर्धक पंचाग आजकल नही निकलता है शके १८४९ मे धारवाड

मे मध्वसांप्रदायानुयायी श्री मदुत्तरादि मठस्थ स्वामी सत्यधान तीर्थ ने ज्योतिष् संमेलन बुलाया. इस संमेलन मे सब पक्षो का मत प्रदर्शन करने के लिये सब ने भाग लिया था. स्वामी का पंचाग निर्णय चित्रापक्ष के अनुसार था. इसके अनुसार सांप्रदायी शिष्यवर्गों के लिये एक पंचाग निर्माण हुआ है.

७ शके १८५५-५६ संवत् १९९०-९१ मे म्हैसूर मे जो ज्योतिष् संमेलन हुआ उसमे चित्रापक्षही ग्राह्य माना गया.

८ शके १८५७, संवत् १९९२ मे इन्दौर मे श्रीमंत होलकर सरकार के आश्रय से महामान्य पंडित मदन मोहन मालवीय, कुलगुरु, बनारस विश्वविद्यालय के नेतृत्व मे अखिल भारतवर्षीय त्रिस्कंध ज्योतिर्वियों का परिषद् भरा. इसके पूर्व जयपूरके महाराजा मानसिंग ने दिल्ली वेध शाला के वख्त ऐसा ही त्रिस्कंध ज्योतिष् परिषद् भरवाया था. इन्दौर परिषद् पांच दिवस तक् रहा. इस परिषद् से सहकार्य करने की विनंति सर्व धर्मपीठोंके शंकराचार्यों से की गयी थी इस संमेलन मे जो ठराव स्वीकृत हुये हैं वह इस प्रकार हैं. (१) नाक्षत्र सौर वर्षमान (सूर्य-सिद्धांतोक्त संस्कार युक्त) (२) सूर्य सिद्धांतोक्त आरंभस्थान (प्राचीन परंपरा धरके) (३) वेधसिद्ध व हक्तुल्य गणित, (४) वेधसिद्ध प्रत्यक्ष अयनांश (५) व्रत, जयंति आदि धर्म-शास्त्र के निर्णय के लिये विशेष स्थान की मध्यम तिथि साधन (६) इन ठरावोंके अनुसार पंचांग तयार करके 'न्याय मण्डळ' के पास भेजना और 'न्याय मण्डल' ने अपने बैठक मे पंचाग निर्णय की शिफारस करना.

९ इन्दौर सम्मेलन मे सात लोगों की अखिल भारतीय

ज्योतिःसम्मेलन का कार्यकारी मण्डल नियुक्त हुआ था उसमे अमरावती के ज्योतिर्विद मंडल के प्रधान मन्त्री उस मंडल के सभासद नियुक्त हुये थे. ४२ ज्योतिषियों का जो. 'न्यायमण्डल' चुना गया था उस 'न्यायमण्डल' मे इस ज्योतिर्विद मण्डल के अध्यक्ष पं. प्रेमशंकरजी दवे और प्रधान मंत्री रा. भगूरकर हैं, इस न्यायमंडल में अखिल भारतवर्षके ज्योतिषी नियुक्त हुये हैं अध्यक्ष पं. प्रेमशंकर दवे और रा. काशीनाथराव भगूरकर इनको संहिता और होरा परिषद का अध्यक्ष मुकरर किये थे. अभीतक 'न्यायमंडल' या कार्यकारी मंडल की बैठक नही हुयी है. संमेलन के ठराव के अनुसार पंचाग मात्र बुलवाये गये है. इस ठराव के अनुसार फक्त एकहि 'भारत विजय पंचाग' तयार किया गया है. इस पंचांग मे आगे लिखी बातें मुख्य है:—

(१) वेधसिद्ध व दृक्तुल्य धर्मशास्त्रोपयोगी ग्रहस्थिति प्राचीन परंपरा को घरके ग्रहोंका दृक्प्रत्यय.

(२) व्रत, उपवास, जयंति, त्योहार, पर्व, पुण्यकाल, स्मार्त भागवतादि एकादशी के निर्णयार्थ विशेष स्थान के तिथि साधन.

(३) वेधसिद्ध व दृक्प्रत्यय अयनांश प्राचीन परंपरागत ऐसा आरंभ स्थान नाक्षत्र सौर शुद्ध वर्षमान (सूर्य सिद्धांतोक्त, बीज संस्कारयुक्त.)

(४) अखिल भारतवर्षीय धर्मशास्त्र निर्णय.

क. नर्मदोत्तर वा दक्षिणभाग का भिन्न भिन्न शास्त्रार्थ.

ख. बंगाल व मद्रास के लिये शुद्ध गणितोक्त शास्त्रार्थ.

ग. पंजाब के लिये संक्रातिपर से मास निर्णय, वा व्रतादिकों का शास्त्रार्थ.

घ. अन्य प्रांतोके देशी रीत रिवाजानुसार शास्त्रार्थ.

ज्योतिर्विद् मण्डल की उपरोक्त ठरावोंके अनुसार शिफारसः—

१० ग्रहलाघव को दृक्कर्म करने के लिये चालन देना चाहिये ये बात स्वतः ग्रहलाघवकार गणेश दैवज्ञ को भी कबूल थी. इनके पिता केशव दैवज्ञ के किये हुये वेधसिद्ध गणित मे सुद्धां गणेश दैवज्ञ को चालन देना पडा. गणेश दैवज्ञ ये स्वतः महान् गणक थे. ग्रहलाघव ग्रंथ ये तत्कालीन सर्व सिद्धांतका दृकप्रत्यय का प्रमाण है. ऐसा ग्रहलाघव परसे हि दिखता है. ग्रहलाघव के टीकाकार ने भी टीका के उदाहरण मे स्पष्ट रविचंद्र की चालन युक्त ही सारिणी दी हैं. (क्षेपात् सध्रुवकान् रवींदुशश भृत्तुगोंद्भवान्मादिकान्। दृष्टि प्रत्यय कारणात् गणितवित् श्री विश्वनाथो बृवेत्।)

११ ग्रहलाघव मे दृक्प्रत्यय उक्त चालन दिया कि चित्रापक्ष निर्माण हुआ. यह आजपर्यंत सिद्ध हुआ है. (अनमोल मे श्री. सकदेव इनके बेलगांव समाचार का लेख देखो.) (१) चित्रापक्षीय गणित ही वेधसिद्ध व दृकतुल्य है, अधिकमास, तिथि, नक्षत्रादिकों, की परंपरा मे अन्तर नही पडता. जब कभी पडता है तो थोडा.

(२) तिथि साधन के लिये प्रत्येक प्रांत ने एक स्थल निश्चित करना, किंवा संपूर्ण भारत वर्ष के लिये उज्जैन अथवा

काशी निश्चय करके उस स्थान का मध्यम कालीन गणित कर धर्मशास्त्र का निर्णय करना.

(३) शके १८२६ संवत् १९६१ के मुंबई के किंवा इन्दौर के शके १८५७ संवत् १९९२ के संमेलनो के प्रस्ताव के अनुसार आरंभस्थान (सूर्य सिद्धांतोक्त) व वर्षमान मात्र शुद्ध और प्रत्यक्ष लेना. चित्रापक्ष का वर्षमान शुद्ध और प्रत्यक्ष है.

(४) चित्रापक्षीय अयनांश किंवा वेधसिद्ध हक्तुल्य अयनांश २२।।। ते २३ के भीतर लेने से प्राचीन परंपरा मे भी अधिक फरक नही पडता.

(५) व्रत, उपवास पर्वादि मे चित्रा गणित से बहुत अंतर नही पडता. और अधिक मास भी वही आता है.

(६) ग्रहस्थिति शुद्ध और हक्तुल्य होते हुये धर्मशास्त्रोपयोगी है. मुहुर्त और संहिता स्कंध के लिये शुद्ध और हक्तुल्य ग्रहस्थिति की आवश्यकता है.

(७) होरा तंत्र के लिये यदि शुद्ध ग्रहस्थिति न हो तो ग्रह व भावसाधन चूक जाते है और फलादेश भी नही मिलता.

(८) वधूवर पत्रिका मेलन यदि अशुद्ध नक्षत्र परसे किया गया तो अनिष्ट फल होगा. इस कारण शुद्ध व हक्तुल्य गणित चाहिये.

१२ शके १८२६ संवत् १९६१ के मुंबई संमेलन का वर्षमान (सूर्य सिद्धांतोक्त व चालन युक्त) ग्रहण कर और सब गणित शके १८५७ संवत् १९९२ के इन्दौर संमेलन के अनुसार करने से पंचाग निर्णय सुलभ और सर्वमान्य हो जाता है. ज्योतिर्विद मंडल के दृष्टिगोचर जो अनेक पक्षके पंचाग हुये हैं उनमे शुद्ध

अर्थात वेधसिद्ध व हकूप्रत्यय ऐसे सर्वमान्य और उपयुक्त और कई प्रांतो मे प्रचलित भी निम्नलिखित पंचाग हैं. बेलगांव का गो सेवक, औंध संस्थान, पूना का चित्रशाला, उमरावती का संचालित विदर्भ पंचागं, संचालितं केतकी पंचांग और काशीका बापुदेव शास्त्री का पंचाग. इसके शिवाय ग्वालेर, जयपूर, उदयपूर, बंगलोर, विजापूर, धारवाड, म्हैसूर, पंजाब, बंगाल, वगैरा प्रान्तो मे भी इसी पक्ष के पंचाग प्रचलित होते जाते, हैं. इन्दौर संमेलन के प्रस्तावानुसार अखिल भारत वर्षोपयोगी ऐसा भारत 'विजय पंचाग' श्रीमंत होलकर सरकार के आश्रय से इन्दौर के ज्योतिषाचार्य विद्यामूषण पं. दीनानाथ शास्त्री चुलैट उनके सुविद्य पुत्र पं० गोपीनाथ शास्त्री इन्होने तयार करके छपाया है. ये पंचाग सब प्रांतो मे लागू होने योग्य और धर्मशास्त्रोपयोगी भी है.

सही

पं. प्रेमशंकर दवे शा. के पाध्ये पं भगूरकर अ. दे. अंभैईकर
अध्यक्ष म. ब. गणोरकर प्रधानमंत्री त्र्यं. गो. गामे
ना. प्र. हिरुळकर व. ना. गोडबोले
भैरव प्रसाद मंत्री.
उपाध्यक्ष

कार्यकारी सभासद

१ र. शा. बापट
२ शं. दौ. गुप्ते
३ लक्ष्मण रा. मोटे
४ देविदास वासुदेव जोशी
५ श्रीकृष्ण नारायणदास लड्ढा
६ पं. रामचंद्र शर्मा
७ गोपाळ मार्तंड देवगांवकर
८ हिरालाल जैन.

साधारण सभासद

१ द. वा. शिदोरे.
२ का. गो. टिपणीस
३ ना. सि. बिडवई
४ रा. मा. उपाध्ये
५ ना. त्र्यं. पातुरकर
६ केशव बाळकृष्ण आठवले.
७ स. गो. सोमलवार
८ त्र्यंबक यशवंत भोसळकर
९ हरिश्चंद्र सेठ
१० दि. दा. बापट
११ काशिनाथ पांडे.